अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2022) दिनांक : 20.12.2022

समय सीमा : 3 घंटा तृतीय वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

प्र. 1 किन्हीं अठारह प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए– 18

आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली (किन्हीं नौ प्रश्नों के उत्तर दें)

(क) आत्मा का ही दमन-शमन करना चाहिए, यह क्यों और किस आगम में बताया गया है?

(ख) गुरु अनुशासन का सुदर्शन चक्र कब प्रयोग में लेते हैं?

(ग) अनुलोम और प्रतिलोम उपसर्गों को सहने में समर्थ कौन होता है?

(घ) संयम की साधना करने वाले पुरूषों के लिए कौन सा गच्छ छोड़ने योग्य होता है?

(ङ) व्यक्ति का आचरण उन्नत कब बनता है?

(च) आचार्य भिक्षु किस जीवन को श्रेयस्कर मानते थे?

(छ) किन दो उद्येश्यों की पूर्ति के लिए आचार्य भिक्षु के भीतर का अनुशास्ता जागता था?

(ज) मुनि रूपजी ने कहा–'खाने में ठंडी रोटी मुझे रूचिकर नहीं लगती।' तब आचार्य भिक्षु ने कौन सा प्रयोग किया?

(झ) खपरेल में अच्छा रंग खोजते हो तो मूल रंग में कौन सी वाधा है? आचार्य भिक्षु ने यह दिशा निर्देश किसे और क्यों दिया?

(ञ) संघ मुक्त होकर साधना की आज्ञा कब दी जाती है?

(ट) 'तुम लोलुप हो।' घटना प्रसंग में आचार्य भिक्षु ने कौन सा प्रयोग किया और उसके लिए कौन सी छूट दी?

आचार्य भिक्षु के विचारों की प्रासंगिकता (किन्हीं दौ प्रश्नों के उत्तर दें)

(ठ) आयारो में अहिंसा धर्म को किस रूप में प्रतिपादित किया गया है?

(ड) निरवद्य दान किस दृष्टि से उपादेय है और किस कोटि में आता है?

(ढ) एक आदमी हिंसा, चोरी या कोई भी दुराचरण कर रहा है तो आचार्य भिक्षु के अनुसार हमारी करूणा किसके प्रति और क्यों होनी चाहिए?

(ण) आचार्य भिक्षु ने धर्म व पाप के कौन-कौन से सूत्र निर्धारित किए?

(त) संघ में कठोर अनुशासन कायम रखने के लिए किसका समूलोच्छेदन परम आवश्यक है?

(थ) श्रमणों के लिए पूर्ण पालनीय और आचरणीय क्या है?

(द) संघ से बहिर्भूत व्यक्ति श्रद्धा के क्षैत्र में जाए तो उसके लिए क्या विधान है?

(ध) वर्तमान युग का वैज्ञानिक मानस किस पूजा का परिपोषक है?

(न) आचार्य भिक्षु के अनुसार संघ में दोष निवारण की पद्धति क्या है?

(प) चरम मुक्ति के शुद्ध साध्य की प्राप्ति के साधन क्या हैं?

आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली–21

प्र. 2 किसी एक प्रश्न का 100 से 150 शब्दों में उत्तर दीजिए– 6

(क) व्यवहार नय और अनुशासन का उल्लेख करें।

(ख) आचार्य भिक्षु के अनुशासन का तरीका विलक्षण था। कभी कोई भूमिका बांधे बिना सामने वाले को त्याग करा देते, कभी स्वयं त्याग कर लेते। स्पष्ट करें।

प्र. 3 न्याय के लिए आवश्यक बातों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट करें कि आचार्य भिक्षु की समता की आंख खुली हुई थी और वे जानते थे कि अनुशास कब, कहां और कैसे करना है। 15

अथवा

आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित संविधान का उल्लेख करते हुए उसकी धाराओं का विवेचन करें।

आचार्य भिक्षु के विचारों की प्रासंगिकता–21

प्र. 4 किसी एक प्रश्नका उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए– 6

(क) 'दान पुण्य और जनतंत्र व्यवस्था' पर टिप्पणी लिखें।

(ख) 'तेरापंथ सेवा का अपूर्व संगठन' विषय का विवेचन करें।

प्र. 5 दया और दान आचार्य भिक्षु की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देन है। विभिन्न उद्धरणों से विषय का प्रतिपादन करें। 15

अथवा

आचार्य भिक्षु अनेकान्त दृष्टि के आराधक व विभज्यवाद के प्रयोक्ता थे, स्पष्ट करते हुए धर्म के भेदों व स्वरूप का आचार्य भिक्षु व अन्य विचारकों के विचारों द्वारा विवेचन करें।

अनुकम्पा की चौपाई–30

प्र. 6 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए– 5

(क) नव कोटि प्रत्याख्यान क्या है?

(ख) भगवान भव्य जीवों पर अनुकंपा कब करते हैं?

(ग) चेटक और कोणिक के युद्ध का वर्णन कौन-कौन से सूत्रों में मिलता है? तथा इस युद्ध में कितने व्यक्ति मारे गये?

(घ) अनगार के लिए जानने योग्य क्या है?

(ङ) भगवान के दीक्षा महोत्सव में कितने इन्द्र आए? तथा प्रभु को कौन-कौन से उपसर्ग हुए।

(च) देवकी के पुत्रों को किसने व कहां लाकर रखा?

(छ) भगवान ने दया का रहस्य किस सूत्र में बताया है?

(ज) पापकारी प्रवृत्ति से हटाने के लिए साधुओं ने किसको उपदेश दिया?

प्र. 7 जगत को मरता देख कर भगवान ने बीच में हाथ देकर किसी को नहीं बचाया। भगवती सूत्र के अनुसार विवरण कीजिए। 10

अथवा

भगवान ने सूत्र साक्षी से जो अनुकम्पाएं साधु के लिए वर्जित बताई है ढाल 2 के अनुसार उसका वर्णन करें।

प्र. 8 किन्हीं दो प्रश्नों की सप्रसंग व्याख्या करें– 15

(क) मोह अनुकंपा जे करे, तिणमे राग नें धेख।
भोग बधे इंद्रया तणो, अंतर उडो देख।।

(ख) अटती में भूलां ने अतंत दुखी देख, च्यारूंई शरणा साध दिरावे।
मारग पूछे तो मनुज साझे, बोले तो भिन-भिन धर्म सुणावे।।

(ग) हणवा सूंस किया छ काय नां, तिणरे टलिया हो मेला उसभ कर्म पाप।
ग्यांनी जांणे साता हुइ एहनें, मिट गया हो जन्म मरण संताप।।

(घ) अग्यांनी रो ज्ञानी कीयां थकां, हुवो निरवे पेला रो उधार हो।
कियो मिथ्याती रो समकती, तिण उतारीयो भव पार हो।।

भिक्ष वाणी–10

प्र. 9 किन्हीं तीन पद्योंकी पूर्ति करें– 10

(क) विण अंकुश.....नांम।।

(ख) वैराग घट्यो.....कालो।।

(ग) ज्यां लग.....होय जाय।।

(घ) जीभ रो.....चाल्यो।।

(ङ) मिश्रधर्म।।